भूमिका

पीएच.डी. के दाखिले के समय स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में किसान जीवन तथा उनके संघर्षों को लेकर एक रुपरेखा तैयार कर ली थी। इसके बाद अपने अन्य विश्वविद्यालयों में शोधार्थी साथियों से भी इस विषय पर चर्चा की। पता चला कि उस समय अच्छे-अच्छे शोध विषयों के माध्यम से किसान-विमर्श पर काम चल रहा था। इसके बाद मैंने इस संदर्भ में अपने शोध-निर्देशक से बातचीत की और उन्होंने शोध अपनी रूचि की विधा में करने की सलाह दी। मेरी उपन्यास पढ़ने के साथ-साथ हिंदी साहित्य इतिहास पढ़ने में भी समान रूचि रही है। साहित्येतिहास में रूचि होने के कारण मैंने अपने शोध-निर्देशक के सुझाव अनुसार 'हिंदी साहित्य के फुटकल कवि और आचार्य रामचंद्र शुक्ल का इतिहास लेखन' नामक विषय पर अपना शोध-कार्य आरम्भ किया।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध का अध्ययन की सुविधानुसार पाँच अध्यायों में विभाजन किया गया है। प्रथम अध्याय : *इतिहास, साहित्येतिहास और इतिहास-दर्शन* है जिसमें साहित्येतिहास को समझने के लिए सबसे पहले इतिहास, उसके शाब्दिक अर्थ तथा परिभाषा का जिक्र किया गया है। इतिहास क्या है? पाश्चात्य विचारकों तथा भारतीय विद्वानों ने इतिहास को किस तरह परिभाषित किया है, इन सब मतों का अध्ययन अध्याय में है। इसके बाद साहित्येतिहास को लेकर विद्वानों के मतों की समीक्षा की है तथा साहित्येतिहास की परम्परा कहाँ से आरम्भ हुई? तथा किन-किन पड़ावों से होती हुई वर्तमान में पहुंची है आदि का जिक्र किया है। इतिहास-दर्शन की परिभाषा तथा इसके इतिहास के साथ सम्बन्ध और इतिहास-दर्शन से सम्बंधित अनेक दार्शनिकों के मतों को भी इस अध्याय में दिखाने का प्रयास किया है।

द्वितीय अध्याय : *साहित्येतिहास लेखन की पद्धतियाँ* है । इस अध्याय को दो भागों में बांटकर इतिहास और साहित्येतिहास की सभी पद्धतियों का अध्ययन किया है। इतिहास लेखन का कार्य कब शुरू हुआ था तथा कौन सी पद्धतियाँ सबसे पहले अपनाई गई थीं, सबका विवेचन किया गया है। यूनानी, रोमन, चीनी तथा भारतीय इतिहास लेखन की पद्धतियों का विस्तृत वर्णन किया है । साहित्येतिहास की आरंभिक वर्णानुक्रम पद्धति से अभी तक जितनी भी पद्धतियों का प्रयोग साहित्येतिहासकारों ने किया है, अधिकतम का उल्लेख इस अध्याय में करने का प्रयास किया है।

तृतीय अध्याय : *हिंदी साहित्येतिहास के फुटकल कवियों का परिचय* में जिन कवियों को शुक्लजी ने अपने इतिहास ग्रन्थ में आदिकाल से रीतिकाल तक फुटकल खाते में रखा है, सबका परिचय दिया है । इन सभी कवियों का अध्ययन शुक्लजी से पूर्व तथा बाद के सभी साहित्येतिहास ग्रन्थों को ध्यान में रखकर किया है जिसमें हमें जन्म, मृत्यु, लिंग तथा ग्रन्थों से सम्बंधित अनेक जानकारियां प्राप्त हुई हैं जिनका वर्णन इस अध्याय में किया गया है। जिन सम्प्रदायों का जिक्र हमें शुक्लजी के ग्रन्थ में नहीं मिलता उनका जिक्र भी उनके महत्वपूर्ण कवियों के साथ किया है।

चतुर्थ अध्याय : *आचार्य रामचंद्र शुक्ल का इतिहास लेखन और फुटकल कवि की अवधारणा* में शुक्लजी की विचार एवं तर्क पद्धति के बारे में विस्तृत चर्चा है। साहित्येतिहास, विज्ञान, निबंध आदि में जो शुक्लजी की स्थापनाएं रही हैं, उन सबको इस अध्याय में उल्लेखित किया है । फुटकल का अर्थ क्या है?,साहित्येतिहास में इस शब्द का प्रयोग तथा इसी तरह के अन्य खातों की अवधारणा पर चर्चा की गई है। शुक्लजी के इतिहास लेखन की पद्धति तथा इस पद्धति पर आलोचकों के मतभेदों को भी दर्शाया गया है। काल-विभाजन सम्बन्धी भी शुक्लजी की मान्यताओं को दिखाने का प्रयास इस अध्याय में हुआ है।

पंचम अध्याय : *फुटकल कवि और आचार्य रामचंद्र शुक्ल के इतिहास लेखन के अन्तर्विरोध* में शुक्लजी के साहित्येतिहास में जो कवि महत्वपूर्ण थे तथा जिनको उनके साहित्य इतिहास ग्रन्थ में

जगह नहीं मिली, उनका विवरण इस अध्याय में कालखंड के हिसाब से किया गया है। सीमांकन की समस्या पर भी जो अन्तर्विरोध हैं उन्हें दर्शाने का प्रयत्न किया गया है। फुटकल कवि को लेकर जितने भी अन्तर्विरोध शुक्लजी के यहाँ हैं उन सब पर साहित्येतिहास लेखकों के जो भी मत रहे हैं उनकी समीक्षा भी प्रस्तुत करने का प्रयास इस अध्याय में किया गया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में अधिकतम कवियों तथा आलोचकों को समाहित करने का प्रयास किया गया है। जिन कवियों तथा आलोचकों को समाहित नहीं कर पाए उनका महत्व भी उतना ही है जितना शोध-प्रबंध में उल्लेखित आलोचकों का है। साहित्येतिहास की परम्परा तथा इसमें लिखे गए ग्रन्थ वर्तमान में संकडों की संख्या में हैं, आवश्यकतानुसार सभी के मतों को शोध में जगह देने का प्रयास रहा है।

बहरहाल, इस शोध-कार्य के पूर्ण होने पर मैं सर्वप्रथम अपने शोध-निर्देशक डॉ. सिद्धार्थ शंकर राय का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने मुझे अपने शिष्य के रूप में स्वीकार किया तथा अपने निर्देशन में कार्य करने का अवसर मुझे दिया। कई समस्याएँ इस अवधि के दौरान आयीं, पथ से भटका भी लेकिन सही समय पर सही दिशा-निर्देश मुझे मिले और हमेशा सकारात्मक बने रहने की शिक्षा मिली। शोध तथा जीवन की सभी समस्याओं का समाधान उन्होंने किया है। मैं विभाग के सहायक आचार्य डॉ. अमित कुमार को भी धन्यवाद देना चाहूँगा, जिनके साथ मैंने अपने शोध-निर्देशक से ज्यादा समय बिताया। समय-समय पर सर से उपयोगी सुझाव मिलते रहे। डॉ. अरविन्द सिंह तेजावत का भी धन्यवाद जो मुझे भविष्य के प्रति निरंतर सचेत करते रहे। विभागाध्यक्ष जी का धन्यवाद जिन्होंने हमारे कागजों पर अपना कीमती समय निकालकर हस्ताक्षर किये हैं।

विशेष आभार मेरे माता-पिता का जिन्होंने इस पंचवर्षीय अवधि में बिना विचलित हुए मेरा हौसला बढ़ाया। छोटी बहन रीना का आभार जिससे शोध-सम्बन्धी काफी मदद मुझे मिली। सभी तरह की परिस्थितियों में सहयोग के लिए पत्नी का आभार। कियान ने मुझे एक जगह बैठना सिखाया।

इस शोध कार्य में दीपक जी, मनोज जी, विकास, अतुल, राहुल ने निरंतर सहायता की । साथी शोधार्थियों तथा विद्यार्थियों का भी विशेष आभार जिनसे आवश्यकता अनुसार मदद मिलती रही । दूसरे विभागों के साथियों का भी धन्यवाद। विश्वविद्यालय के सभी उन साथियों का धन्यवाद जो मुझे जानते हैं।

पूरे पाँच साल छात्रवृत्ति के कागजों को सम्भालने के लिए हर्ष जी, अरविन्द, संदीप व चेतन के साथ-साथ पुस्तकालय के साथियों का भी धन्यवाद। उन सभी गैर-शैक्षणिक साथियों का धन्यवाद जो मुझे जानते हैं। ये वर्ग ऐसा है जिनसे मेरा परिचय सबसे ज्यादा रहा है तथा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इन्होंने मेरी काफी मदद की है।

काशी हिंदू विश्वविद्यालय, बनारस, लखनऊ वि.वि., लखनऊ, जवाहरलाल नेहरू वि.वि., दिल्ली, दिल्ली वि.वि., दिल्ली, नागरीप्रचारिणी सभा, बनारस आदि संस्थाओं तथा इनमें अध्ययनरत साथियों का भी धन्यवाद। प्रो. आर.के.तुल्ली व डॉ. बलविन्द्र शास्त्री का भी विशेष आभार जिनसे मुझे प्रेरणा मिलती रही।

एक आभार श्री मुकेश, करतार,अशोक व आनंद का भी जिन्होंने पूरी इस अवधि में मेरे स्वास्थ्य का ख्याल रखा।

उन सभी सुधी कृतिकारों का भी मैं आभारी हूँ, जिनके ग्रन्थ मेरे सहायक और मार्गदर्शक बने।

अमन